INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS
VOLUME 2, ISSUE 7, JULY 2014
ISSN-2320-2882
ORIGINAL ARTICLE

राजस्थान राज्य में कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिककरण से सम्बन्धित योजनाओं के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव
प्राचार्य
महाराजा सूरजमल टी.टी. कॉलेज,
भरतपुर (राजस्थान)

निधि शर्मा
शोधकर्त्री
पेसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजूकेशन एण्ड रिसर्च यूनिवर्सिटी,
उदयपुर(राजस्थान)

शोध सारांश

भारत को गुलामी की जंजीरों से आजाद हुए 67 वर्ष से अधिक समय व्यतीत हो चुका है। संविधान की मूल भावना के अनुरूप 6 से 14 वर्ष के सभी बालक बालिकाओं को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के स्वप्न को साकार करने से प्रेरित थी। भारत की जनसंख्या का एक महत्त्वपूर्ण भाग कच्ची बस्तियों में निवास करता है। सरकार द्वारा विभिन्न संस्थाओं एवं योजनाओं के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण हेतु प्रयास किये जा रहे हैं। इन प्रयासों की सफलता अध्यापकों की इन संस्थाओं एवं योजनाओं के प्रति अभिवृत्ति का मापन करके ज्ञात की जा सकती है। प्रस्तुत शोध के प्रमुख उद्देश्य हैं– (1) राजस्थान राज्य में कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिककरण से सम्बन्धित योजनाओं के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना तथा (2) राजस्थान राज्य में कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिककरण के मार्ग में आने वाली बाधाओं के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना। शोध के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि (1) राजस्थान राज्य में कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिककरण से सम्बन्धित योजनाओं के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है। (2) राजस्थान राज्य में कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिककरण के मार्ग में आने वाली बाधाओं के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तावना

राजस्थान राज्य में शिक्षा के अभिकरण अपने कार्य में संलग्न है। इन अभिकरणों के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण हेतु अनेकानेक योजनाएं संचालित की जा रही है। यह योजनाएं विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों में भिन्न–भिन्न रूपों में दृष्टिगत होती है। गरीब, कमजोर वर्ग एवं कच्ची बस्तियों से सम्बन्धित विद्यार्थियों हेतु भी ये योजनाएं सार्थक भूमिका का निर्वाह कर रही है। किसी भी शैक्षिक योजना कि सार्थकता तभी सिद्ध हो सकती है। जब विद्यालयें में कार्यरत अध्यापक उसके प्रति सकारात्मक सोच प्रकट करें। प्रस्तुत शोध के माध्यम से राजस्थान राज्य के भरतपुर सम्भाग में

Please cite this Article as : **अनिल कुमार श्रीवास्तव, निधि शर्मा, राजस्थान राज्य में कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिककरण से सम्बन्धित योजनाओं के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन** : International Journal Of Creative Research Thoughts, Volume 2, Issue.7, July 2014

स्थिति कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण से सम्बन्धित योजनाओं के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करने का प्रयत्न किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

शोधकर्त्री ने विभिन्न शोध अध्ययनों का अध्ययन किया जिसमें अध्यापकों के विभिन्न विषयों पर विचार एवं अभिवृत्ति का मापन किया गया है। श्रीमती सुधा रानी (2013) ने उच्च प्राथमिक विद्यालयों में आयोजित किये जाने वाले नवाचारी कार्यक्रमों का विद्यालय वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जिसमें उन्होंने पाया कि उच्च प्राथमिक विद्यालयों में उपलब्ध शैक्षिक सुविधाओं का विद्यालय वातावरण पर प्रभाव पड़ता है तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों में आयोजित की जाने वाली पाठ्य सहगामी क्रियाओं का विद्यालय वातावरण पर प्रभाव पड़ता है। कॉट्स, डी. एस. एवं कौर, वी. (2013) ने परसेप्शन एण्ड एटीट्यूड ऑफ टीचर्स फ्रॉम रूरल एण्ड अरबन बैकग्राउण्ट टुवार्ड्स कन्टीन्यूअस एण्ड कम्प्रीहेन्सिव इवेल्यूएशन ऐट सैकण्डरी लेवल विषय पर अध्ययन किया तथा पाया कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति शहरी एवं ग्रामीण अभिभावकों के प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अन्तर पाया गया, ग्रामीण अध्यापकों का प्रत्यक्षीकरण शहरी अध्यापकों की तुलना में अधिक उच्च स्तरीय पाया गया तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति शहरी एवं ग्रामीण अभिभावकों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया, ग्रामीण अध्यापकों की अभिवृत्ति शहरी अध्यापकों की तुलना में अधिक उच्च स्तरीय पायी गयी।

शोध की आवश्यकता एवं महत्त्व

शिक्षा मानव जीवन के विकास का आधार है। शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर सुधार किया जाता रहा है। भारतीय संविधान में वर्णित 6 से 14 वर्ष की आयु के बालक–बालिकाओं हेतु प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के क्रम में सरकार द्वारा देश भर में विभिन्न संस्थाएं एवं योजनाएं संचालित की जा रही है। भारत देश की आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा आजादी के 67 वर्ष पश्चात भी कच्ची बस्तीयों में न्यूनतम जीवन यापन से सम्बन्धित सुविधाओं के साथ रहने को मजबूर हैं। शिक्षा के सार्वभौमीकरण की योजनाओं का लाभ इन क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थियों हेतु कितना सार्थक है इसका ज्ञान हमें तभी हो सकता है जब इन बस्तियों में स्थित विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की इन संस्थाओं एवं योजनाओं के प्रति अभिवृत्ति का ज्ञान हो सके। इसी क्रम में शोधकर्त्री ने भरतपुर सम्भाग में स्थित कच्ची बस्तियों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षा के सार्वभौमीकरण के प्रति अभिवृत्ति को ज्ञात करने का प्रयत्न किया है। प्रस्तुत शोध कार्य के परिणाम निश्चित रूप से नीति–निर्माताओं, शिक्षाविदों एवं शैक्षिक प्रशासकों हेतु मार्ग–दर्शक सिद्ध होंगे।

शोध के उद्देश्य

1. राजस्थान राज्य में कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिककरण से सम्बन्धित योजनाओं के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

2. राजस्थान राज्य में कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिककरण के मार्ग में आने वाली बाधाओं के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री ने राजस्थान राज्य के भरतपुर, धौलपुर, सवाई माधोपुर तथा करौली जिले की कच्ची बस्तियों में स्थित में कार्यरत 100 अध्यापकों का चयन किया है। जिनमें महिला एवं पुरूष अध्यापकों की संख्या समान है।

उपकरण

शोधकर्त्री ने शोध कार्य हेतु दत्त संकलन के लिए स्वनिर्मित उपकरण ''अध्यापक प्रत्यक्षीकरण मापनी'' का प्रयोग किया है।

क्रिया विधि

सर्वप्रथम उक्त उपकरण विभिन्न विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों को दिया गया इस हेतु शोधकर्त्री ने स्वयं अध्यापकों से सम्पर्क किया जिनका चयन यादृच्छिक विधि से किया गया था। उनसे शोध के उद्देश्य बताकर शोध कार्य में सहयोग प्रदान करने हेतु आग्रह किया गया। उन्हें समझाया गया कि उपकरण में पाँच विकल्प हैं जिनके आधार पर वे अपनी राय व्यक्त कर सकते हैं। इस हेतु उन्हें प्रत्येक कथन पर अपनी पसन्द के विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाना है।

सांख्यिकी

उपकरण के माध्यम से संग्रहित किये गये प्रदत्तों का सारणीय किया गया तत्पश्चात माध्य, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का उपयोग प्रदत्तों का विश्लेषण करने हेतु किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या–1

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (x)	मानक विचलन (S.D.)	टी–अनुपात (t)	सार्थकता स्तर
पुरूष शिक्षक	50	34.26	3.63	0.45	दोनों स्तर पर असार्थक
महिला शिक्षक	50	33.88	4.69		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.98 स्वतंत्रता अंश = 98
0.01 स्तर पर टी का मान = 2.63

तालिका संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि राजस्थान राज्य में कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण हेतु चलाये जा रहे कार्यक्रमों के प्रति इन क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या–2

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (x)	मानक विचलन (S.D.)	टी–अनुपात (t)	सार्थकता स्तर
पुरूष शिक्षक	50	34.32	4.08	1.16	दोनों स्तर पर असार्थक
महिला शिक्षक	50	33.24	5.18		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.98 स्वतंत्रता अंश = 98
0.01 स्तर पर टी का मान = 2.63

तालिका संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि राजस्थान राज्य में कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिककरण के मार्ग में आने वाली बाधाओं के प्रति इन क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

1. राजस्थान राज्य में कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण हेतु चलाये जा रहे कार्यक्रमों के प्रति इन क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. राजस्थान राज्य में कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिककरण के मार्ग में आने वाली बाधाओं के प्रति इन क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. बेस्ट, जॉन, डब्ल्यू : ''रिसर्च इन एजूकेशन'' प्रेन्टिस हॉल प्रा. लि, नई दिल्ली, 1973
2. मूले, जार्ज जे. के. : ''द साइन्स ऑफ एजूकेशन रिसर्च'', न्यू देहली, यूरिसिया पब्लिशिंग हाऊस, प्रा. लि. 1964
3. रमल, जे. एफ. : इन्ट्रोडक्शन टू रिसर्च पोजीशन एन एजूकेशन'' हॉपर्र ब्रादर्स, न्यूयार्क, 1968
4. राय, पारसनाथ : ''अनुसंधान परिचय'', लक्ष्मीनारायण, आगरा, 1995
5. शर्मा, आर. ए. : ''शिक्षा अनुसंधान'', सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, संस्करण, 1965